कार्ल मार्क्स: वर्ग संघर्ष तथा अतिरिक्त मूल्य

(Karl Marx: Class Conflict & Surplus Value)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

वर्ग संघर्ष

- *The Communist Manifesto* (with F. Engels), 1848
- **वर्ग:** व्यक्तियों का समूह, जो उत्पादन की विधियों व शक्तियों के संदर्भ में समान प्रस्थिति साझा करते हैं।
- उत्पादन प्रणाली पर स्वामित्व व वंचितता के आधार पर समाज में **दो परस्पर विरोधी हितों वाले वर्ग**
  - लाभ कमाने वाले (संचित वर्ग): Haves
  - मजदूरी कमाने वाले (वंचित वर्ग): Have nots
- स्वामी वर्ग द्वारा सदैव से वंचित वर्ग का शोषण किया जाता रहा है तथा इस शोषण को लेकर दोनों वर्ग परस्पर संघर्षरत रहे हैं। (दास–मालिक, अर्द्धदास किसान–सामंत, श्रमिक–पूंजीपति)
- निजी संपत्ति के अधिकार के कारण ही पूंजीवादी युग में समाज परस्पर विरोधी हितों वाले दो वर्गों में विभक्त है, पूंजीपति व श्रमिक। चूंकि पूँजीपतियों का लाभ श्रमिकों के अतिरिक्त मूल्य के शोषण पर ही निर्भर है, अतः पूंजीपति वर्ग द्वारा श्रमिकों का शोषण किया जाता रहा है तथा इस शोषण को लेकर दोनों वर्ग परस्पर संघर्षरत रहे हैं।

वर्ग ध्रुवीकरण

Revolutions and Counter Revolution in Germany

मार्क्स ने 8 प्रकार के वर्गों की चर्चा की।

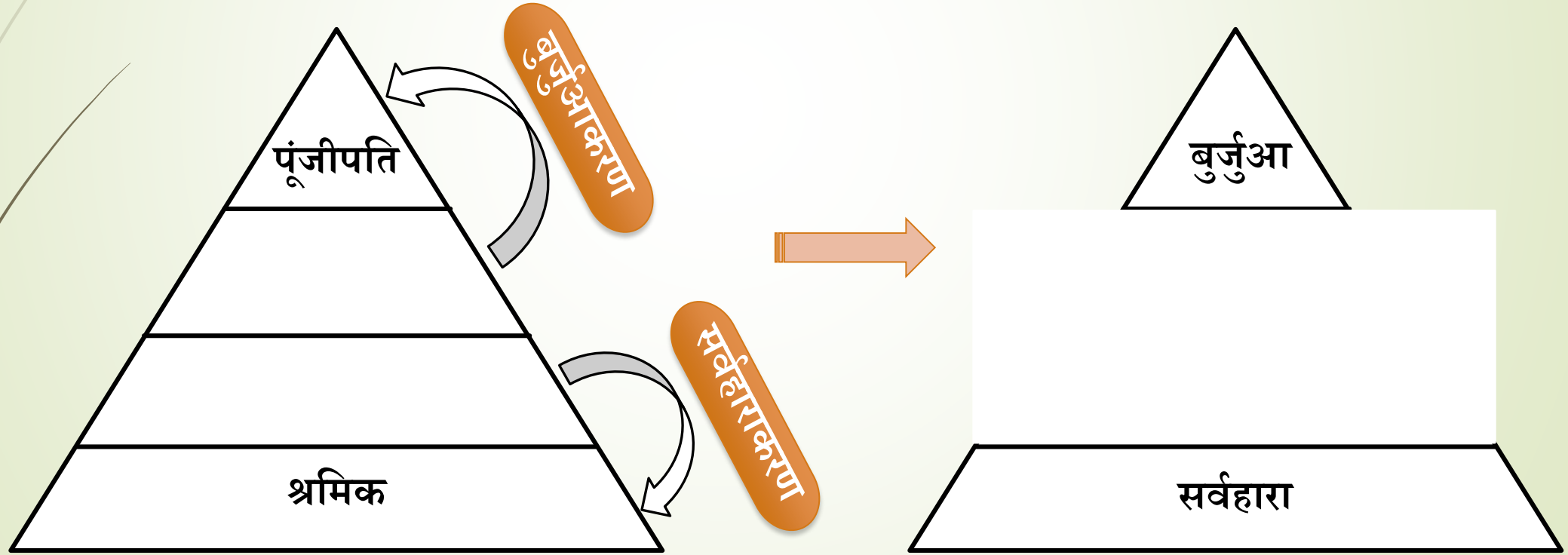

‘स्वयं में वर्ग’ तथा ‘स्वयं के लिए वर्ग’

- पूंजीवादी समाज के अलावा आरंभिक युगों में वर्गों की विशेषताएँ तो समान थीं, लेकिन उनमें चेतना का अभाव था।
- **‘स्वयं में वर्ग’= वर्ग – चेतना**
- वर्ग चेतना का अभाव (वस्तुनिष्ठ वर्ग)
- मार्क्स का मत है कि अस्तित्व द्वारा चेतना का निर्धारण होता है। अतः समान दशाओं से समान चेतना का जन्म हुआ, जिसके परिणामस्वरूप वंचित वर्ग अपने अधिकारों के लिए जागेगा तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संगठित होगा।
- **‘स्वयं के लिए वर्ग’= वर्ग + चेतना**
- इसे मार्क्स ने **सामाजिक वर्ग** की संज्ञा प्रदान की है। (वास्तविक/ व्यक्तिनिष्ठ वर्ग)
- मार्क्स का मत है कि ‘स्वयं के लिए वर्ग’ ही वह वर्ग है जो क्रांति करता है तथा सामाजिक परिवर्तन लाता है।

गलत तथा सत्य चेतना

गलत/ झूठी चेतना (False Consciousness)

- यह चेतना परिवर्तनवादी नहीं होती है अर्थात् व्यवस्था की निरंतरता में विश्वास रखती है।
- सामान्य समस्याओं, मजदूरी, कार्य करने की दशा आदि पर केंद्रित

सत्य/ वास्तविक चेतना (True Consciousness)

- यह चेतना गतिशीलता व परिवर्तन को महत्व देती है।
- विचारों की एक निश्चित संरचना के तौर पर लोगों को एकत्रित करती है।
- दमन/ शोषण की वृहत स्तर पर व्याख्या

वर्ग संघर्ष का सिद्धांत

अब तक के मानव समाज का इतिहास वर्ग–संघर्ष का इतिहास रहा है।

वर्ग संघर्ष के कारण

- **विरोधाभास:** हितों के आधार पर
- **अलगाव में वृद्धि**

क्रांति के लिए आवश्यक दशा

क्रांति स्वत: ही उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि यह परिपक्व दशा के उपरांत सृजित होती है।

क्रांति के लिए परिपक्व दशा

- पीड़ित/ शोषित श्रमिकों का जनसमूह
- श्रमिकों के मध्य संचार का जाल
- नेतृत्व के आधार पर एक निश्चित/ सुदृढ़ विचारधारा की उद्भव/ जागरूकता
- एक सामूहिक शत्रु की पहचान

क्रांति की परिपक्व दशा के लिए आवश्यक शर्त है कि वह आर्थिक संकट के तौर पर वंचित वर्ग (Have nots) को नुकसान करे, जैसे– आर्थिक उतार–चढ़ाव, अस्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा, एकाधिकार का उद्भव, एक कल्याणकारी राज्य जो संचित वर्ग के लिए कार्य करे आदि।

अतिरिक्त मूल्य

- *Das Capital*, 1867
- मार्क्स का मत है कि किसी वस्तु के मूल्य का निर्धारण उत्पादन में लगे श्रम से होता है न कि पूंजी से।
- अतिरिक्त मूल्य वह होता है जो श्रमिक द्वारा वास्तव में अपनी श्रम शक्ति के बदले में खर्च किए गए मूल्य से अतिरिक्त उत्पन्न किया जाता है, परंतु पूंजीपति वर्ग इसे हड़प लेता है।
- यह अतिरिक्त मूल्य मजदूर/ श्रमिक के शोषण का प्रतीक है।
- **अतिरिक्त मूल्य= कुल उत्पादित मूल्य – श्रमिकों को दिया जाने वाला मूल्य**
- जब कोई मजदूर स्वयं को दिये जाने वाली मजदूरी से अधिक श्रम करता है, तो इसे हम मजदूर का 'अतिरिक्त श्रम' कहते हैं।

अतिरिक्त मूल्य के स्वरूप

- **निरपेक्ष अतिरिक्त मूल्य**

  काम के घंटे को बढ़ाकर

- **सापेक्ष अतिरिक्त मूल्य**

  काम के दिन को सो हिस्सों में बाँटकर

Next Class:

कार्ल मार्क्स: अलगाव तथा अन्य अवधारणाएँ

(Karl Marx: Alienation & Other Concepts)